"बिखरता परिवार, जिम्मेदार कौन? परिवार की स्त्री की कितनी जिम्मेदारी"

परिवार एक स्थायी और सार्वभौमिक संस्था है जिसमें व्यक्तियों का समूह विवाह, जन्म–मरण और रक्त सम्बन्धों से जुड़ा रहता है।

आगस्ट काम्टे कहते है "परिवार समाज की आधारभूत इकाई है" क्योंकि परिवार व्यक्ति को प्रेम, स्नेह, सहानुभूति आदर सम्मान की भावनाएँ सिखाता है। बच्चों में संस्कार परिवार से आता है इसलिए प्लेटो ने "परिवार को मनुष्य की पाठशाला कहा है।"

हमारे भारतीय समाज में आज में लगभग बीस साल पहले तक संयुक्त परिवार का विशेष महत्व रहा है लेकिन आज के समय में सयुंक्त परिवार ना के बराबर रह गये है। तब परिवार में घर का एक मुखिया होता था जो प्रत्येक सदस्य की स्वास्थ्य सम्बन्धी, आर्थिक, सामाजिक आदि आवश्यकताओं का ध्यान रखता था और प्रत्येक सदस्य परिवार के कार्यों को पूर्ण जिम्मेदारी से करता था। उनके बीच में प्रेम अधिक था। कभी झगड़ा होता भी था तो मुखिया जो निर्णय लेता था वह सबको मान्य होता था तथा मुखिया जरूरत पड़ने पर दंड भी देता था। बच्चों को संस्कारवान, चरित्रवान बनाने और नैतिक विकास में सयुंक्त परिवार का महत्वपूर्ण योगदान था। लेकिन आज संयुक्त परिवार बिखरते जा रहे है ऐसा क्यों हो रहा है?

परिवार बिखरने का पहला कारण नित्य बढ़ता उपभोक्तावाद है जिसने मनुष्य को महत्वाकांक्षी बना दिया है और अधिक सुख–सुविधाओं के लालच में उसकी सहनशक्ति कम हो रही है। मनुष्य भावात्मक रूप से विकलांग होता जा रहा है। वह सोचता है कि बुजुर्ग व्यक्ति घर में विद्यमान मूर्ति की भांति है उन्हें केवल दो वक्त की रोटी व दवा–दारू चाहिए उनकी क्या इच्छाएँ है इससे उन्हें कोई मतलब नही है और जब पारिवारिक कलह में बुजुर्ग कुछ सलाह देते है तो उनकी बात जहर के समान लगती है।

परिवार पर बढ़ते आर्थिक बोझ, शहरों में आवसीय समस्याओं, अत्यधिक महंगाई व सीमित आय के कारण भी परिवार बिखरते जा रहे है। अब व्यक्ति बड़े परिवार की जिम्मेदारी निभाने में सक्षम नही है।

Scanned by CamScanner

छोटी–छोटी बातों पर लड़ना, एक दूसरे की कमियाँ देखना, पुरानी बातों पर कटाक्ष करना, बड़े बूड़ों की गलतियों को याद दिलाकर उन्हें दुखी करना, अपनी सुख–सुविधाओं का विशेष ध्यान रखना, समस्याओं पर चर्चा न करना, ईर्ष्या भाव रखना, परिवार की कमियों को पड़ोस में व रिश्तेदारों में उजागर करना, आमदनी से अधिक खर्चा कर शेखी दिखाना, नये विचारों को ना मानकर पुरानी बातों को सही मानना अनेक ऐसे कारण है जो परिवार को विघटित करते है।

अब मुख्य बात यह है कि इस संयुक्त परिवारो के बिखरने में घर की स्त्री कितनी जिम्मेदार है। चाहे वह माँ, बहन, पत्नी, भाभी किसी भी रूप में हों। परिवार के दो स्तम्भ होते है पुरूष और स्त्री। उन्हीं के सयुंक्त प्रयास से परिवार बनते और चलते है। किन्तु परिवार की सुव्यवस्था का उत्तरदायित्व स्त्री का ही होता है। स्त्री जन्मदात्री होती है। बच्चा उसी से हंसना, बोलना और अच्छे बुरे संस्कार सीखता है। नारी परिवार के वातावरण को सुसंस्कृत बनाती है। वह परिवार के प्रत्येक सदस्य के खाने–पीने और सुख–सुविधाओं का ध्यान रखती है। बच्चे व बड़ों की मन की बात जान लेती है। इसलिए कहा भी गया है कि ' न गृहं गृहं मित्याहु गृहणी गृह मुच्यते'' अर्थात इमारत घर नही कहलाती, वस्तुतः गृहिणी, घरवाली ही घर है। इसलिए स्त्री को परिवार का हदय और प्राण कहा जाता है क्योंकि स्त्री चाहे तो बड़े परिवार में रहते हुऐ भी सबको प्रेम के धागे में बाँधकर रख सकती है। लेकिन इसके लिए उसका मानसिक रूप से प्रसन्न व संतुष्ट रहना तथा पति का साथ देना भी आवश्यक है।

लेकिन कहीं सास बहु की साजिश, वर्चस्व की जंग, ससुराल में असुरक्षा की भावना, रिश्तों के उलझते पेंच, बढ़ता मन मुटाव और बाबाओं और धर्म गुरूओं की दखलअंदाजी भी परिवार की एकता को खंडित करती है। यह आम धारणा है कि पारिवारिक कलह और बिखराव का मुख्य कारण औरतें है। लेकिन अगर पुरूष चाहे तो इस बिखराव को रोक सकता है। जैसे सास यह चाहती है। कि सारी जिम्मेदारी बहु के कन्धों पर डालकर काम से हाथ खींच ले लेकिन परिवार से अपना वर्चस्व नही त्यागना चाहती लेकिन एक समय ऐसा आता है कि बहु की प्रतिक्रिया होती है और वो सास की बातों को सहने की बजाय दो टूक जवाब देने लगती है। ऐसे में पुरूष की समझदारी ही दोनो के टकराव को रोक सकती है।

आजकल परिवारों में सास, बहु, जेठानी, नन्द सभी अपना–अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए अनेक तिकड़म लगाकर एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश

Scanned by CamScanner

करती है। जिससे घर घर न रहकर राजनीति का अखाड़ा बन जाता है। कई बार सास, नन्द अपने बेटे या भाई को बहु से अलग करने की कोशिश करती है। ताकि उनका बेटा या भाई अपनी पत्नी की न सुनकर केवल उनकी बात सुनें लेकिन यहाँ पुरूष को सही बात का साथ देना चाहिए चाहे वह सही बात उसकी माँ, बहन, पत्नी किसी की भी हों। और आज के समय में अधिकतर लोग रिश्ता जोडतें समय अपनी बेटी के लिए एकल परिवार ढूँढते है। और माँ का लड़की की ससुराल में दखलअंदाजी करना भी परिवार के विघटित होने का एक कारण है। परिवार को तोड़ने, औरतों को उकसाने और भ्रांति फैलाने में टेलीविजन के सास बहु के स्पेशल धारावाहिक भी पूरी भूमिका निभातें है। जिसका असर कम पढ़ी–लिखी महिलाओं पर पड़ता है और वे परिवार में वैसा ही व्यवहार करती है। जैसा की टेलीविजन में दिखाया जाता है।

लेकिन मेरे विचार में परिवार का बिखरने का एक और कारण आजकल की स्त्रियों में बढ़ी जागरूकता और शिक्षा भी है। क्योंकि पहले स्त्रियों को ये शिक्षा दी जाती थी कि परिवार के लिए अपनी व्यक्तिगत खुशियों का बलिदान देना सर्वोपरि होता है। लेकिन आज की स्त्री के लिए आत्मत्याग ही सब कुछ नही है। वह व्यक्तिगत हितों को भी उतना ही महत्व देती है।

अंत में यह कहना गलत होगा कि परिवार बिखरनें की पूर्णतः जिम्मेदार केवल स्त्री ही है। चाहे वह कितनी ही शिक्षित हों, उसका दृष्टिकोण कितना भी बदल गया हो, वह चाहे कितने भी मनमुटाव रखें और प्रपंच रचने की कोशिश करें पुरूष चाहें तो उसकी सोच में बदलाव लाकर, उसे संयुक्त परिवार का महत्व समझाकर काफी हद तक परिवार बिखरनें से बचा सकता है।

नाम–खुशबू माहेश्वरी

जिला–सहारनपुर, उत्तरप्रदेश

मो0 न0 – 8279704133

Scanned by CamScanner